विवाह (Marriage)

प्रस्तावना

विवाह मानव समाज की सबसे प्राचीन, सार्वभौमिक एवं महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। यह केवल स्त्री और पुरुष के बीच वैधानिक एवं सामाजिक संबंध ही नहीं है, बल्कि परिवार, समाज और संस्कृति की निरंतरता का आधार भी है। विवाह के माध्यम से व्यक्ति को सामाजिक मान्यता, पारिवारिक जीवन, संतानोत्पत्ति तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने का अवसर मिलता है। भारतीय समाज में विवाह को धार्मिक संस्कार के रूप में भी माना गया है।

चित्र (Flow Chart)

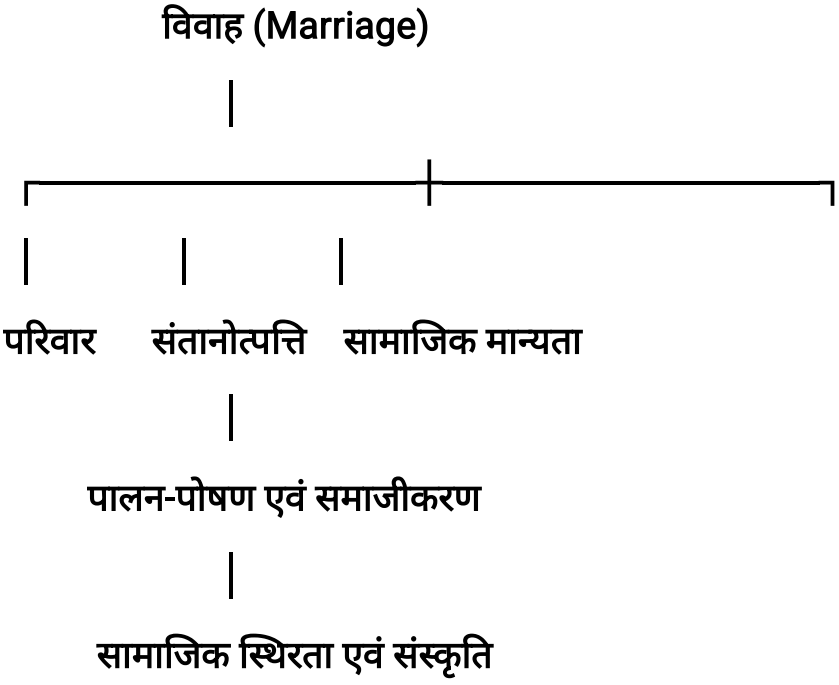

विवाह का अर्थ

विवाह वह सामाजिक, धार्मिक एवं कानूनी संस्था है जिसके माध्यम से स्त्री और पुरुष पति-पत्नी के रूप में एक-दूसरे को स्वीकार करते हैं तथा परिवार की स्थापना, संतानोत्पत्ति, पालन-पोषण और सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हैं।

परिभाषाएँ

1. वेस्टरमार्क (Westermarck):

"विवाह एक या अधिक पुरुषों तथा एक या अधिक स्त्रियों के बीच समाज द्वारा स्वीकृत संबंध है, जो पति-पत्नी तथा उनकी संतान के अधिकारों एवं कर्तव्यों को निर्धारित करता है।"

2. बोगार्डस (Bogardus):

"विवाह वह सामाजिक संस्था है जिसके माध्यम से स्त्री एवं पुरुष पारिवारिक जीवन में प्रवेश करते हैं।"

3. मजूमदार एवं मदान:

"विवाह समाज द्वारा स्वीकृत ऐसी व्यवस्था है जिसके माध्यम से परिवार की स्थापना एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन होता है।"

विवाह की विशेषताएँ

1. विवाह एक सार्वभौमिक सामाजिक संस्था है।

2. समाज द्वारा स्वीकृत संबंध है।

3. परिवार की स्थापना का आधार है।

4. यौन संबंधों को वैधता प्रदान करता है।

5. संतानोत्पत्ति का वैध माध्यम है।

6. पति-पत्नी के अधिकार एवं कर्तव्य निर्धारित करता है।

7. सामाजिक नियंत्रण एवं अनुशासन बनाए रखता है।

8. आर्थिक एवं भावनात्मक सहयोग प्रदान करता है।

9. सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण करता है।

10. समाज की निरंतरता बनाए रखता है।

- ## विवाह का महत्व

1. परिवार की स्थापना

विवाह परिवार निर्माण का आधार है।

2. संतानोत्पत्ति

वंश परंपरा एवं समाज की निरंतरता बनाए रखता है।

3. बच्चों का पालन-पोषण

बच्चों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास में सहायता करता है।

4. सामाजिक नियंत्रण

अनुशासन एवं सामाजिक व्यवस्था बनाए रखता है।

5. आर्थिक सहयोग

पति-पत्नी मिलकर परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

6. भावनात्मक सुरक्षा

प्रेम, विश्वास, सहयोग एवं मानसिक संतुष्टि प्रदान करता है।

7. सांस्कृतिक संरक्षण

संस्कार, परंपराएँ एवं सामाजिक मूल्य अगली पीढ़ी तक पहुँचते हैं।

8. सामाजिक प्रतिष्ठा

व्यक्ति को समाज में सम्मान एवं पहचान मिलती है।

विवाह के उद्देश्य

1. परिवार की स्थापना करना।

2. संतानोत्पत्ति एवं वंश वृद्धि करना।

3. बच्चों का पालन-पोषण एवं समाजीकरण करना।

4. यौन संबंधों को सामाजिक एवं कानूनी मान्यता देना।

5. सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना।

6. आर्थिक सहयोग एवं सुरक्षा प्रदान करना।

7. भावनात्मक संतुष्टि प्रदान करना।

8. सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराओं का संरक्षण करना।

- ## विवाह के प्रकार

(1) एकविवाह (Monogamy)

एक पुरुष का एक स्त्री से तथा एक स्त्री का एक पुरुष से विवाह।

(2) बहुविवाह (Polygamy)

(क) बहुपत्नी विवाह (Polygyny)

एक पुरुष का अनेक स्त्रियों से विवाह।

(ख) बहुपति विवाह (Polyandry)

एक स्त्री का अनेक पुरुषों से विवाह।

(3) समूह विवाह (Group Marriage)

कई पुरुषों एवं कई स्त्रियों का सामूहिक वैवाहिक संबंध।

(4) अंतर्विवाह (Endogamy)

अपनी जाति, धर्म या समुदाय के भीतर विवाह।

(5) बहिर्विवाह (Exogamy)

गोत्र, कुल या निकट संबंधियों के बाहर विवाह।

(6) प्रेम विवाह

वर-वधू द्वारा स्वयं जीवनसाथी का चयन।

(7) पारंपरिक (व्यवस्थित) विवाह

परिवार एवं अभिभावकों द्वारा तय किया गया विवाह।

• भारतीय समाज में विवाह का महत्व

- विवाह को धार्मिक संस्कार माना जाता है।

- परिवार एवं समाज की स्थिरता का आधार है।

- सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण करता है।

- सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नैतिकता को बढ़ावा देता है।

- सामाजिक एकता एवं राष्ट्रीय विकास में योगदान देता है।

निष्कर्ष

विवाह समाज की आधारभूत एवं महत्वपूर्ण संस्था है। यह केवल पति-पत्नी का संबंध नहीं, बल्कि परिवार, समाज और संस्कृति की निरंतरता का आधार है। आधुनिक समय में विवाह के स्वरूप में परिवर्तन आया है, फिर भी इसका सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं कानूनी महत्व आज भी बना हुआ है। इसलिए विवाह मानव जीवन और समाज की स्थिरता के लिए अत्यंत आवश्यक संस्था है।

संदर्भ ग्रंथ

1. कपाड़िया, के. एम. – Marriage and Family in India.

2. मजूमदार, डी. एन. एवं मदान, टी. एन. – An Introduction to Social Anthropology.

3. मैकाइवर, आर. एम. एवं पेज, सी. एच. – Society: An Introductory Analysis.

4. हरलाम्बोस, एम. एवं होलबोर्न, एम. – Sociology: Themes and Perspectives.

5. योगेन्द्र सिंह – भारतीय समाज.

6. एस. पी. गुप्ता – समाजशास्त्र.

7. रामनाथ शर्मा – समाजशास्त्र के सिद्धांत.

8. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) एवं समाजशास्त्र विषय की मानक पाठ्य-पुस्तकें।